KAKATIYA GOVERNMENT COLLEGE
HANAMKONDA, WARANGAL (U)

STUDENT STUDY PROJECT ON
HINDI KE BAAL SAHITY EAK ADYAYAN

छात्र अध्ययन परियोजना

हिन्दी के बाल साहित्य :: एक अध्ययन

प्रस्तुतकर्ता

SUBMITTED BY

1. M.D. Sohail B. Com CA II yr 9182044063
2. Sunil B.B.A I yr 8919402461
3. Rohan Kumar B.Com CA I yr 9618567266
4. Abhishek Mishra B.Com CA I yr " " "
5. M.D. Samad B.B.A I yr 9550085448
6. Santhosh B.Com CA II yr 8309782441

पर्यवेक्षक

SUPERVISED BY

Dr. VODAPALLY MAMATHA

DEPARTMENT OF HINDI

Scanned with CamScanner

हिन्दी के बाल साहित्य :: एक अध्ययन

परिकल्पना: Statement of the Problem or Hypothesis

मानव जीवन की सार्थकता, समग्रता एवं सफलता के लिए साहित्य अत्यंत प्रमुख साधन है । साहित्य शब्द में ही 'हित' की भावना निहित है । साहित्य मानव जीवन के अभ्युदय एवं निश्रेयस् यानी प्रेय श्रेय की प्रेरणा देता है । साहित्य अनेक रूपों में अनंत काल से, मानव के संग-संग रहते हुए उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को संस्पर्श करते हुए मनुष्यता एवं मानवता का संरक्षक बनकर रहा है। मानव जीवन के विविध आयाम एवं आवश्यकताओं के अनुसार साहित्य अनेक रूपों में अवतरित होता हुआ दिखाई देता है ।

मानव जीवन के चिरंतन मूल्यों का संरक्षक का काम साहित्य के माध्यम से संपन्न होता हुआ दिखाई देता है । प्राचीन साहित्य वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, संस्कृत के कथा साहित्य यानी काव्य नाटक इत्यादि कृतियों के माध्यम से महान् साहित्यकार मानवीय मूल्यों को जीवित रखने का महत प्रयास किये है । **'इदम् परम्परा प्राप्तम्'** कहते हुए मध्य युगीन एवं आधुनिक साहित्यकारों ने भी इसी उध्देश्य को लेकर रचनाओं को प्रस्तुत किये है ।

भारतीयों का विश्वास यह है कि बालकों में संस्कारों का बीज बोने से वह जीवन भर प्रतिफलित होता है । क्यों कि आज का बालक ही कल के अच्छा नागरिक एवं मानवता पक्षधर बन सकता है । इसी महत उध्देश्य को ध्यान में रखकर कई साहित्यकारों ने बालकों के मनोविकास के लिए उनमें बौध्दिक क्षमता को जागृत करने के लिए उनके जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए उनके मनोदशाओं को ध्यान में रखकर उनकी आयु और स्तर को लक्ष्य में रखकर बाल साहित्य का आयोजन किये है । ऐसी रचनाएँ प्राचीन साहित्य में अधिक मात्रा में उपलब्ध होती है । यथा पंत्रतंत्र, हितोपदेश, कथा सरित्सागर, बौध्दों के जातक कथाएँ, बैताली पच्चीसी आदि ।

Scanned with CamScanner

हिन्दी साहित्य में सूरदास को बाल साहित्य के प्रवर्तक के रूप में कई विद्वानों ने मान्यता दी है। यही नही मानसकार तुलसीदास भी बाल रामचंद्र को लक्ष्य करके भी अनेक पद गाये है और हनुमान के वीरता को भी रोचक रूप से प्रस्तुत किये है। यही नहीं उनके पहले कबीर दास, रैदास जैसे संत साहित्यकारों ने भक्ति गीत गाने का प्रयत्न किये है। इस प्रकार रीति काल से होते हुए आधुनिक काल तक साहित्यकारों ने मानव के बाल्यावस्था की उपेक्षा न करते हुए उसकी महत्व को जानते हुए संस्कार प्रदत्त अनेक गीतों को हमारे सम्मुख रखें हैं।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के सिध्दांतों से प्रभावित होकर आधुनिक बाल साहित्यकारों ने बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल नए युगबोध के अनुसार आधुनिक संदर्भ को ध्यान में रखकर बाल साहित्य को रूपायित करने का सुदृढ़ प्रयास किये है। इस श्रेणी में हिन्दी में प्रेमचंद ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।

बाल साहित्य को पढ़ने से यह विदित हुआ है कि - बाल साहित्य को प्रेमचंद जैसे साहित्य कारों ने यथार्थ भावभूमि पर खड़ा किया है और समाज के शोषितों को जितने प्रखर रूप से उजागर किया है उतनी ही योजना बध्द से बच्चों के प्रति भी ध्यान लगाकर प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य का निर्माण किया है। क्योंकि प्रेमचंद के दृष्टि में साहित्य का उध्देश्य रहा है कि जीवन के उत्थान के लिए उपयुक्त साहित्य ही सच्चा साहित्य माना जाता है।

बच्चों में आत्म सम्मान, मानवीय गुणों के प्रोत्साहन के लिए उपयुक्त साहित्य का निर्माण करना साहित्यकारों का अपना उत्तरदायित्व रहता है। मानव को श्रेष्ठतर बनाने का सही समय बाल्यकाल ही होता है। इस काल की उपेक्षा करने से व्यक्ति में तत्स्वरूप समाज में भी बुराइयाँ छा जाती है। फलस्वरूप जाति एवं राष्ट्र का पतन अनिवार्य हो सकता है। दोषपूर्ण एवं द्वेषपूर्ण समाज व्यक्ति के लिए कल्याण कारी नहीं हो सकता। इसलिए व्यक्ति के विकास के लिए उनके बाल मन को सुधारना संस्कार युक्त बनाने, सच्चे मानवता के पक्षधर बनाना हमारे लिए एक राष्ट्रीय कर्त्तव्य होता है।

इसी उपलक्ष्य को दृष्टि में रखकर मैं ने इस परियोजना अपना लिया। इस परियोजना से बालसाहित्य की सफलताओं एवं कमियों को समाज के सम्मुख रखना मुख्य उध्देश्य है।

Scanned with CamScanner

वैश्वीकरण के परिदृश्य में, बदलते हुए परिवेश, टूटते हुए मानवीय संबंध, पारिवारिक विघटन, बच्चों का अकेलापन, आर्थिक विषमताएँ, पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण के विषम परिस्थितियों में बालकों का मन विकृत होता हुआ दिखाई देता है । ऐसे वातावरण में बच्चों में मानसिक विकार एवं अपराध का भावना, प्रतिशोध की भावना पारिवारिक आत्मीयता की कमी आदि लक्षण दृग्गोचर हो रहे हैं । ऐसी मानवता घातक विषक परिस्थितियों को समाप्त करने के लिए बच्चों को स्वस्थ वातावरण की आवश्यकता है । यह कार्य बाल मनोविज्ञान से केंद्र करके लिखित बाल साहित्य से ही सुसंपन्न हो सकता है । उपर्युक्त परिास्थित्तियों में परिवर्तन लाकर स्वस्थ समाज की रचना करना ही इस परियोजना का लक्ष्य है ।

Scanned with CamScanner

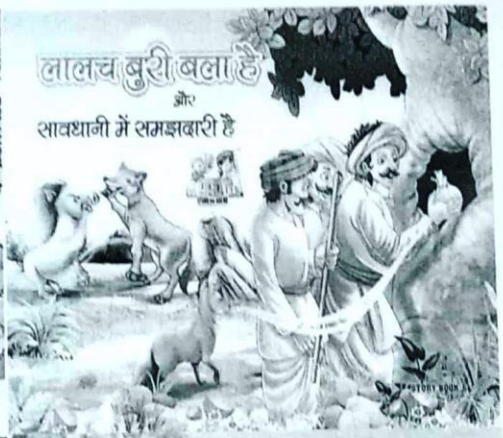

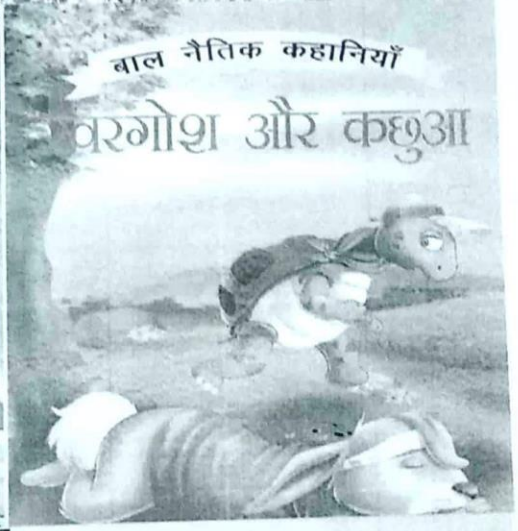

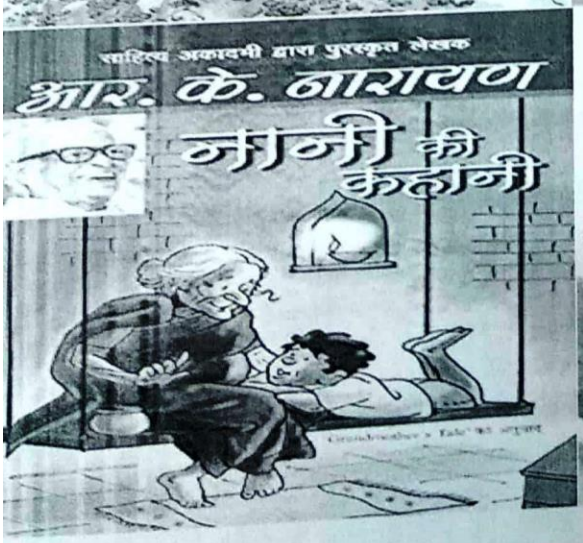

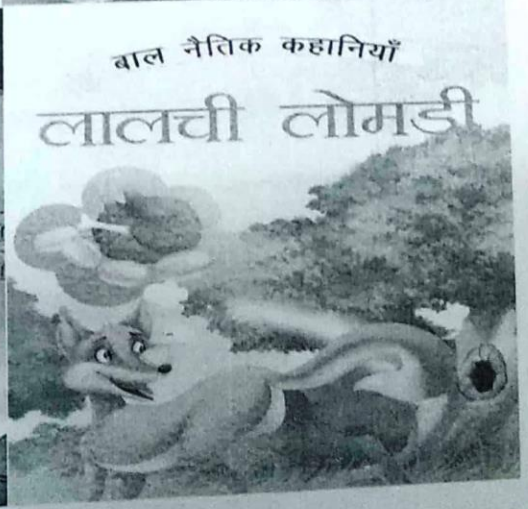

Scanned with CamScanner

उध्देश्य : Aims and Objectives

हिन्दी बाल साहित्य का महत उध्देश्य

किसी भी देश या समाज के भविष्य का अंदाजा उसके वर्तमान बचपन को देखकर लगाया जा सकता है । बचपन के निर्माण में पारिवारिक वातावरण, विद्यालय, सहचर और बच्चों को पढ़ने के लिए मिलनेवाला साहित्य आदि प्रमुख भुमिका निभाते हैं । 'सहितेन हितायः' अर्थात् जिस लिखित कृति के अध्ययन, चिन्तन और मनन से मानवमात्र की भलाई हो वहीं सच्चे अर्थों में साहित्य की कोटि में आयेगी । सामान्यतः ४ से १४ वर्ष तक की आयु वाले बच्चों के लिए लिखे जानेवाले साहित्य 'बाल साहित्य' माना जाता है ।

प्रत्येक देश का भविष्य बच्चों पर ही आधारित है । वही देश के भावि निर्माता है । अतः ''भावि निर्माताओं के प्रति जो देश उदासीन रहता है उसका भविष्य अंधकारपूर्ण समझना चाहिए ।''

मुंशी प्रेमचंद कहते है - ''साहित्य जीवन की आलोचना है, चाहे वह निबंध हो, कहानी हो या काव्य हो, उसे हमारे जीवन की व्याख्या या आलोचना करनी चाहिए ।'' उसी प्रकार बाल साहित्य भी बालक के जीवन की आलोचना है । चाहे वह बालगीत हो, नाटक हो, या कहानी हो, उसे बालक के जीवन की सर्वांगीण विकास करनी चाहिए ।

रवींद्रनाथ ठैगूर ने लिखा है - ''हम सत्य को भी असंभव कहकर छोड़ देते हैं और बच्चे असंभव को भी सत्य कहकर ग्रहण कर लेते है ।''

साहित्य का उध्देश्य जो है वही बाल साहित्य का भी । अंतर इतना ही है कि बाल साहित्य में पाठक बालक होता है, साहित्य में पाठक वयस्क होते हैं । मनोवैज्ञानिकों ने बालकों की आयु के आधार पर तीन श्रेणियों में विभक्त किया है ।

१. शिशु वर्ग (आयु ३ से ६ वर्ष) २. बाल वर्ग (७ - १० वर्ष)

३. किशोर वर्ग (११ से १४ तक) इस आधार पर बाल-साहित्य के अंतर्गत ३ प्रकार की रचनाएँ आ जाती हैं । शिशु साहित्य, बाल साहित्य और किशोर साहित्य ।

रचना की दृष्टि से बाल-साहित्य की अनेक विधाएँ हैं, जैसे - काव्य, कहानी, नाटक, जीवनी, उपन्यास , निबंध, गीत, यात्रा वृत्तान्त इत्यादि , जो साहित्य के विभिन्न उध्देश्यों की पूर्ति

Scanned with CamScanner

करते है ।बाल साहित्य बच्चों का जीवन, उनकी समस्याएँ, उनका मनोरंजन और उनकी हँसी - खुशी व विकास के लिए होता है ।इन्ही तथ्यों की सार्थक और सजीव अभिव्यक्ति बाल साहित्य है ।

बाल साहित्य का उध्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है और उनमें आदर्श रूपी बीज बोकर राष्ट्र को पल्लवित और पुष्पित करना है। बाल साहित्य की विषयवस्तु बालक के साथ -साथ उसका विस्तृत परिवेश भी जिसके साथ बालक जीवन विकसित होता है ।बाल साहित्य बच्चों को मनोरंजन कराती है साथ में बाल मनो विज्ञान के समावेश द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक, परंपराओं, संस्कारों, नैतिक एवं जीवन मूल्यों, आचार-विचार, रहन-सहन, संपूर्ण भारतीय संस्कृति के प्रति सतत चेतन बनाने में अपनी भूमिका निभा रहा है ।

साहित्य की समीक्षा : Review of Literature

बाल साहित्य का अभिप्राय बच्चों के लिए लिखे जानेवाले साहित्य से है । बाल लेखन का प्रारंभ उसी दिन से हो गई थी जिस दिन मनुष्य ने इस धरती पर जन्म लिया था । बच्चों के हँसने और रोने में एक लय होती है । एकांत पर्वतीय घाटी में बहनेवाली झरने की कल कल में तथा हवा की सरसराहट की एक लय होती है । बच्चे की सबसे प्यारी विधा कहानी है । दादी-नानी की कहानियों की पिटारी जब खुलती तो उसमें घरे एक-से एक नायाब रत्नों की चमक से नन्हे-मुन्नों की आँखें चौंधिया जाती ।

काव्य दर्श में कहा गया हैं - **'वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते'** अर्थात् वाणी के सहयोग से मानव जीवन की यात्रा सुगम बन जाती है । बाल साहित्य से बाल जीवन सहज और सुगम बन जाता है । दादी-नानी बड़े बढ़ों ने घरों में बच्चों को कहानियाँ सुनाते थे ।

लोरियाँ अनेक युगों से बच्चों का मन बहला रही है और वे आज भी शाश्वत बाल साहित्य के रूप में है । परी कथाएँ भी बच्चों का युगों से मनोरंजन कर रही है ।

कहानी का जन्म प्रागैतिहासिक काल में हुआ । यह वह समय था जब मनुष्य अपने भोजन के लिए जानवरों का शिकार के अनुभव घर-परिवार और बच्चों को बताए । सुननवालों में रुचि एवं रोचकता बढ़ाने के लिए कल्पना का सहारा लिया ।

Scanned with CamScanner

भारतीय साहित्य की परंपरा मौखिक है । यह परंपरा आज भी हमारे यहाँ लोक कथाओं के रूप में बाल साहित्य का आधार होती हैं । हमारे यहाँ प्राचीन ग्रंथों के रूप में पंचतंत्र, कथा सरित्सागर, सिंहासन बत्तीसी और बैताली पच्चीसी,

जातक कथाएँ आदि ऐसे अनमोल खजाने हैं, जिन्होंने सदियों से देश में ही नहीं विदेशों में भी लोक प्रियता प्राप्त की हैं । इन कहानियों ने बच्चों और बड़ों को समान रूप से मनोरंजन किया है । बड़ों ने इन कहानियों को मूल रूप से सुना तो बच्चों ने अपनी सरल भाषा में सुना ।कहानी का रूप समय के साथ बदला, लेकिन इसमें निहित शिक्षा आज भी बच्चों को प्रेरणा एवं मनोरंजन प्रदान करती है ।

बच्चों का बड़ों से पृथक स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है । जिसमें बच्चों की अपनी नैतिकता, कल्पना और आदर्श हुआ करते है, अतः इसी पृष्ठभूमि में रचा गया साहित्य उनके विकास में सहयोगी होता है । छोटे बच्चों का संसार अपने आकार- प्रकार, रंग-रूप में बड़ों के संसार से सर्वथा भिन्न होता है । बड़ों के संसार में लोक-शिष्टाचार, सभ्यता, संस्कृति, समाज, राष्ट्र, जाती, आदर्श, नियम-विधान आदि पग-पग पर विद्यमान रहते हैं , जिनसे अलग करके हम व्यक्ति की कल्पना नहीं कर सकते । बच्चों के संसार में इन सबका अभाव रहता हैं । वे नैतिकता, नियम, शासन, कर्त्तव्य जैसे बंधनों से पृथक रहते हैं । उनके लिए कोई महान नहीं , कोई छोटा नहीं होता । उन्हें अपने खेल - खिलौने, तस्वीरों की पुस्तकों के प्रति इतना मोह होता है उतना अन्य किसी वस्तु या व्यक्ति से नहीं । बच्चे सभी को अपने ज्ञान के मानदंड से ही मापते है । क्योंकि उसका हृदय साफ, निर्मल रहता है ।

बाल साहित्य की परिभाषाएँ :

बाल साहित्य के संबंध में प्राचीन काल से एक ही विचारधारा रही है । आधुनिक युग में बाल साहित्य संबंधित विचारधारा विस्तृत हो गई है । बाल साहित्य संबंधित कुछ प्रमुख भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यकारों की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं :-

श्री विष्णु प्रभाकर के अनुसार-''बीसवी सदी की सदी बालकों की सदी कहा जाय तो अन्युक्ति नहीं होगी क्योंकि इस सदी में पहली बार यह स्वीकार किया गया कि बच्चों का स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है । इससे पहले वे केवल बडों का छोटा रूप ही माने जाते थे । बीसवी सदी मे

Scanned with CamScanner

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विशेषकर मनोविज्ञान के क्षेत्र में नयी खोजों के कारण इसी भ्रम का निराकरण किया है ।''

डॉ. श्रीप्रसाद के शब्दों में - ''वह समस्त साहित्य जिसमें बाल साहित्य के तत्व हैं अथवा जिसे बालकों ने पसंद किया है भले ही जिसकी रचना मूलतः बालकों के लिए न हुई हो बाल साहित्य है ।''

हिन्दी बाल साहित्य के संबंध में गम्भीरता से विचार करनेवाले विद्वानों में कविवर सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य और सफल बाल साहित्यकार के अवधारणा को इस प्रकार स्पष्ट कर रहे है कि - ''सफल बाल साहित्य वही है, जिसे बच्चे सफलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएँ । यों तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं, किंतु सचमुच जो बालकों के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दें, वही सफल बाल साहित्य लेखक है ।''

वाल्टर डिलामीर -''मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ कि उत्तम कोटि के साहित्य में जो भी सर्वोत्तम है उसी को बच्चों का साहित्य माना जा सकता है ।''

निष्कर्षतः बाल साहित्य वह साहित्य है जिससे बच्चों के मनोरंजन के साथ- साथ प्रेम, सेवा, सत्य, ईमानदारी, दुःख-कातरता, परिश्रम आदि शाश्वत मानव मूल्यों के अंकुर बाल-मन में रोप सके, बच्चों में दूसरों के सुख-दुःख में सहभागी बनने का भाव जगा सकें, साथ ही जो बच्चों का स्वस्थ विकास करने में भी सहायक हो और ज्ञान वर्धक होने के साथ - साथ नैतिक गुणों से भी युक्त हो वही बाल साहित्य है ।

हिन्दी में बाल साहित्य का आरंभ :-

हिन्दी बाल साहित्य के विशाल उपवन के लिए जमीन तैयार करने का काम संस्कृत के पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथों ने किया है । पालि भाषा में रचित जातक कथाओं का भी इस भूमि को निर्मित करने में प्रमुख योगदान है । लोक साहित्य, पुराण, कथा सरित्सागर आदि इस कार्य में महत्वपूर्ण सिध्द हुई ।

Scanned with CamScanner

बाल साहित्य के इतने समृध्द अतीत के बावजूद विभिन्न कालों के अनुसार हिन्दी बाल साहित्य के विकास का अध्ययन करे तो हम पाते हैं कि बीसवी शताब्दी के पूर्व तक इस ओर समुचित और सुनियोजित प्रयासों का सर्वथा अभाव रहा है ।

हिन्दी बाल साहित्य का विकास क्रम :

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि में हिन्दी बाल साहित्य के क्रमिक विकास को विभिन्न युगों में विभाजित कर लेना उचित है । हिन्दी बाल साहित्य का विकास हिन्दी साहित्य के विकास के साथ हुआ है । हिन्दी साहित्य के साथ बाल साहित्य ने भी अपना स्वतंत्र रूप निखारने के लिए संघर्ष किया था । इस संघर्ष में उसे निम्न लिखित तथ्यों की उपलब्धियाँ विभिन्न युगों में अलग-अलग प्राप्त हुई थी ।

१. हिन्दी में विशुध्द बाल साहित्य रचना का सूत्र पात ।
२. बाल साहित्य में क्रांतिकारि परिवर्तन
३. बाल साहित्य की समृध्दि तथा विकास एवं
४. बाल साहित्य को स्वतंत्र विधा की स्वीकृति ।

इन तथ्यों को आधार बनाकर ही डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने बाल साहित्य के विकास क्रम को निम्नलिखित युगों में विभाजित किया है :-

१. पूर्व भारतेंदु युग : सन् १८४५ से १८७३ तक
२. भारतेंदु युग : सन् १८७४ से १९०० तक
३. द्विवेदी युग : सन् १९०१ से १९३० तक
४. आधुनिक युग : सन् १९३१ से १९४६ तक
५. स्वातंत्र्योत्तर युग : सन् १९४७ से १९५७ तक
६. वर्तमान युग : सन् १९५७ से १९८० तक
७. समकालीन युग : सन् १९८० से आजतक ।

Scanned with CamScanner

आज का बच्चा वर्तमान जीवन की विसंगतियों और संत्रास से जूझने की ताकत के साथ-साथ भविष्य के लिए विचार संपदा भी चाहता है। आज का बच्चा अकेला है, तनाव में है। माता-पिता के संग साथ के लिए तरस रहा है। आज के बच्चों की ऐसी कोई प्रजाति नहीं, जो चिंतामुक्त खुशहाल बचपन जी रही हो। इन स्थितियों में बाल साहित्य का दायित्व बहुत बढ़ जाता है। बच्चों की ऐसी रचनाएँ दी जानी जरूरी है, जिनसे उन्हें अपना जीवन गढ़ने में मदद मिले।

समकालीन बाल साहित्य लेखन के पुरानी पीढ़ी के बाल साहित्यकारों में प्रमुख है - रामेश्वर दयाल दुबे, द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, शकुंतला सिरोठिया, रामस्वरूप दुबे, चंद्रपाल सिंह यादव 'मयंक', डॉ. श्री प्रसाद, डॉ. राष्ट्रबन्धु मनोहर वर्मा, डॉ. सरोजिनी कुल श्रेष्ठ, गोपालदास नागर, जयप्रकाश भारती, हरिकृष्ण देवसरे, दामोदर अग्रवाल, चंद्रदत्त इंदु, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, चक्रधर 'नलिन' आदि।

समकालीन बाल साहित्य लेखन की विवेच्य कालावधि के सशक्त हस्ताक्षर सूर्यकुमार पाण्डेय, रमेश तेलंग, देवेंद्र कुमार, उषा यादव, शम्भूदयाल चतुर्वेदी, विश्वबंधु, श्यामकुमार दास, घमंडीलाल अगरवाल, रमेश थानवी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, सुरेंद्र विक्रम, जाकिर अली 'रजनीश', रामनिरंजन 'ठिमाऊ', सीतारामगुप्ता, मोहम्मद साजिद खान, कामना सिंह, नागेशपाण्डेय 'संजय' आदि।

इस प्रकार समकालीन बाल साहित्यकार समसामायिक बच्चों की समस्याओं को, उपेक्षाओं, तनाव आदि को अपने साहित्य का विषय बनाया है। बाल मनो विज्ञान को समझे बिना भी श्रेष्ठ बाल साहित्य नहीं लिखा जा सकता है। हर आयु वर्ग के बच्चों की जिज्ञासाएँ, उनका मानसिक क्षितिज, उनके सपनों का कलख और उनके अनुभव जगत को समझे बिना श्रेष्ठ बाल साहित्य का सृजन संभव नहीं। बच्चों की समूची दुनिया रहस्य-रोमांच की कथाओं की दीवानी है। साहसिकता के उद्रेक के लिए ये रचनाएँ जरूरी भी हैं। बच्चों को कल्पनाशील बनाने के लिए परी-कथाओं का औचित्य है और उन्हें सर्वथा नकारा नहीं जा सकता। राष्ट्रीयता और मानव वाद की अनुगज तो बाल साहित्य में जरूरी है ही। जीवन-मूल्यों से संयुक्त होने के साथ-साथ उसे युगीन परिस्थितियों का ऐसा दस्तावेज होना चाहिए, जो आज के बालक के संसार, स्वप्न और अस्मिता

Scanned with CamScanner

की इंद्रधनुष छवि उकेरे तथा बच्चे को एक बेहतर इन्सान बना सकें । इसी में बाल साहित्य की सार्थकता है ।

अनुसंधान क्रिया विधि : Research Methodology

१. हमने गुणात्मक शोध पध्दति को अपनाया हैं ।

२. इस शोध पध्दति मे सहायक डाटा से यह परियोजना का निर्माण किया है ।

विश्लेषण : Analysis of Data

बाल साहित्य की प्रवृत्तियाँ

जिस प्रकार बाल साहित्य की अनेक विधाएँ है, उसी प्रकार बाल साहित्य की अनेक प्रवृत्तियाँ है । जिनका बाल साहित्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है । बाल साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं ।

हिन्दी बाल साहित्य आधुनिक शिक्षा एवं मनोविज्ञान की देन है । बाल साहित्य का आधार बाल मनोविज्ञान होता है । बाल्यावस्था में ही मानव के समूचे जीवन की आधार शिला रखी जाती है । इस अवस्था में ही उसके जीवन विकास की निर्दिष्ट दिशा मिलनी चाहिए । जिससे स्वस्थ मानव जीवन में बाल मनोविज्ञान के जन्म के विकास का क्षेत्र विकसित हो गया है । इसीलिए बाल मनोविज्ञान को आज के युग की आवश्यकता कहा गया है ।

मनोवैज्ञानिक धरातल पर बाल मन का विश्लेषण करेना चाहे तो हम पायेंगे कि यह बालमन भावों एवं विचारों के स्तर पर विविधता लिए हुए होता है । यह युग जीवन से भी प्रभाव ग्रहण करता रहता है । यही कारण है कि हमें प्रत्येक काल की बाल मानसिकता में अंतर दिखाई देता है । चूकती जा रही बाल पीढ़ी का बाल मन कुछ था और आज का बालमन कुछ और ही है, आगे की पीढ़ी का कुछ और होगा ।

जिज्ञासा बाल साहित्य का दूसरी प्रवृत्ति है, बच्चे स्वभाव से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं । अतः जरूरत है कि उनकी जिज्ञासा का स्वस्थ रूप में हल किया जाय । जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी के लोदे को खूबसूरत मूर्ति बनाता है उसी प्रकार अच्छा बाल साहित्य बच्चों में स्वस्थ

Scanned with CamScanner

संस्कार रोपित करता है । वेद पुराण, रामायण, महाभारत जैसे साहित्य बच्चों का जिज्ञासा का स्वस्थ रूप से तृप्त किया है और करते आ रहे है ।

पौराणिता बाल साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों में एक है । बच्चे बाल कहानियों के माध्यम से पौराणिकता की जानकारी प्राप्त करती हैं । बच्चों की कल्पना शक्ति भी इतने उर्वर होती है कि वे हर तथ्य की खोज करते है और सुलभ मनोवृत्तियों के द्वारा सभी चीजों में तादात्मय स्थापित करते हैं । इस साहित्य से बच्चों को सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, परोपकार, ईमानदारी, दया, साहस, पराक्रम, धर्म, मधुरवचन, आत्म सम्मान विनयपूर्ण व्यवहार, विश्व बंधुत्व व पारस्परिक सद्भाव इत्यादि सामाजिक - नैतिक आदर्शों की तरफ तथा राष्ट्र भक्त बनाने की ओर उन्मुख किया जाता है ।

वैज्ञानिकता भी बाल साहित्य की प्रवृत्तियों में प्रमुख है । वर्तमान युग विज्ञान का युग है । विज्ञान हमारे जीवन का अविभाज्य अंग बन चुका है । इसका परिणाम यह निकला कि जो विज्ञान नीरस लगता था, वह अपनी प्रक्रिया से ही संवेदना पैदा करता था । संवेदना ही साहित्य का आधार होती है । यदि वैज्ञानिक जानकारी साहित्य के आधार पर दी जा सकें तो वह शाश्वत होगी बल्कि साहित्य के आस्वाद के लिए नये द्वार भी खुलेंगे तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास भी होगा । अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों को तोड़कर सत्य का वास्तविक रूप को परखने की क्षमता बढ़ती है ।

बाल साहित्य एवं बाल मनोविज्ञान :

बालयावस्था में ही मानव के समूचे जीवन की आधारशिला रखी जाती है । इस संबंध में उसके जीवन के विकास की सही और संतुलित दिशा मिलनी चाहिए, जिससे स्वस्थ मानव जीवन निर्मित हो सके । वैसे तो प्राचीन काल से ही बचपन की महत्व समझी जाती रही है हमारे देश में धर्म ग्रंथों में भी गर्भस्थ शिशु से किशोर अवस्था तक बालक के समुचे विकास के लिए कहा गया है फिर भी आधुनिक जीवन में बाल मनोविज्ञान के जन्म और विकास से यह क्षेत्र विस्तृत हो गया है । इसलिए बाल मनोविज्ञान को आज के युग की आवश्यकता कहा गया है ।

मनोविश्लेपकों ने बाल-मानस से लेकर बालकों के प्रत्येक व्यवहार और क्रियाओं का

Scanned with CamScanner

गहराई से अध्ययन किया और बालकों के स्वस्थ मनोविज्ञान के लिए बाल मनोविज्ञान की आवश्यकता बताया है। बाल साहित्य को तो बाल मनोविज्ञान ने ही जन्म दिया है। इसलीए बाल साहित्य के अध्ययन के लिए बाल मनोविज्ञान का संक्षिप्त परिचय आवश्यक है।

सामान्य अर्थ में बाल मनोविज्ञान से तात्पर्य बाल मन के अध्ययन से है। परंतु मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान होता है और व्यवहार का संबंध अंतर्जगत व बहिर्जगत दोनों से ही है। अतः मानसिक पक्ष से शारीरिक पक्ष भी अभिन रूप से जुड़ा हुआ है।

क्रो और क्रो के अनुसार - ''मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानव संबंधों का अध्ययन है।''

स्किनर के अनुसार - ''मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।''

वुड़वर्थ -''मनोविज्ञान, वातावरण के संबंध में व्यक्ति की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।''

बाल मनोविज्ञान व्यक्ति के गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था के प्रारंभतक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन है।

बीसवी शताब्दी के प्रारंभ से ही अनेक विद्वानों की दृष्टि बाल मनो विज्ञान के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुई। मनोवैज्ञानिकवेत्तों, चिकित्सक, मनो विश्लेषक समाज सुधारक और धर्म प्रचारक सभी की दृष्टि इस ओर आकर्षित हुई। इस शताब्दी के प्रारंभ में बाल मनोविज्ञान की अध्ययन अधिकांशतः शिशु संवेग, रुचि, खेल, भाषा और शारीरिक विकास की गति से संबंध था। क्यों कि इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि शिशु में कब कौन से परिवर्तन क्यों होते हैं। विकास के इस क्रम में प्रयास द्वारा कुछ सुधार संभव है या नहीं, ये परिवर्तन केवल क्रमिक विकास नीति और प्रवाह के सूचक मात्र है। प्रवाह को बांध द्वारा अनुवंचित कर मोडा भी जा सकता है। इस अभाव ने बाल मनो विज्ञान को एक नई दिशा दी और अब बाल मनो विकास का ही द्योतक है।

बाल विकास के अध्ययन से हम बालक की क्षमता एवं व्यवहार को समझ कर निर्धारित कर सकते हैं कि किस आयु के बालक से क्या अपेक्षा की जा सकती है और उसके साथ कैसा व्यवहार कर सकते हैं। स्वस्थ संतुलित बालक के सहयोग से उसकी ऊर्जा का सही उपयोग कर

Scanned with CamScanner

उसकी अहंता को संतुष्ट कर उसमें अपने प्रति विश्वास उत्पन्न किया जा सकता है। उसके बाद असंतुलन की स्थिति में बालक का यह अभ्यास एवं अभिभावक के प्रति नव जागृत विश्वास उसे अभिभावक के सहयोग के लिए तैयार रहेगा। ऐसे में असंतुलन की अवस्था में विरोध की वृत्ति बहुत कम होगी और बालक का विचार सहज हो सकेगा।

जाँच परिणाम : Findings

हिन्दी के बाल साहित्य का विश्लेषण का मुख्य लक्ष्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना क्योंकि देश के भावि निर्माता वे ही हैं। अति प्राचीन काल में माताएँ बच्चों को लोरी सुनाकर उनका मन बहलाया करती थीं। ये लोरी एवं कविताएँ अलिखित होने के कारण मौखिक हैं। इन मौखिक गीतों से ही बच्चों का बौध्दिक, मानसिक विकास होता था।

प्राचीन काल के पंचतंत्र, कथा सरित्सागर, हितोपदेश, बैताली पच्चीसी आदि कहानियाँ जीवंत हैं। इस साहित्य से बच्चों में अच्छे गुणों का विकास होता है। आदिकाल में उपलब्ध हिन्दी का बाल साहित्य सिर्फ ज्ञान बोधतक ही सीमित रहा। भक्तिकाल के कबीर, तुलसी, सूर की रचनाओं ने बच्चों के मन मे मनुष्यत्व के श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को सफलतापूर्वक बीजांकुरित किय है। जैसे -

"बल बुधि, विद्या देहु मो हि, हरहु कलेश विकार"

रीतिकाल में भी बाल साहित्य का सृजन किया गया। आधुनिक काल बाल साहित्य का स्वर्णयुग है। इसमें गद्य के सभी विधाओं में बाल साहित्य का सृजन हुआ। इस युग की बाल साहित्य की प्रमुख विशेषता यह है कि विशुध्द रूप से बाल पाठकों को केंद्र बनाकर लिखा गया है। इस काल मे बच्चों का स्वतंत्र अस्तित्व की स्वीकृति हुई है। बाल साहित्य में क्रांतिकारि परिवर्तन हुई है। इस साहित्य की प्रवृत्तियों में बहुत से बदलाव हुए हैं। मनोरंजन, ज्ञानवर्धन के साथ साथ पौराणिक ग्रंथों के माध्यम से बच्चों के चरित्र का निर्माण करना मुख्य उद्देश्य रहा। भारतीय संस्कृति के अनुरूप बच्चों को संस्कारित करना था। बच्चों को प्रेरणा देने के लिए विश्व के महापुरुषों की जीवनियाँ लिखी गई। वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति जगाने के लिए विज्ञान संबंधी रोचक साहित्य लिखी गई।

Scanned with CamScanner

आज का बालक कल के समाज का विधाता है। सामाजिक संरचना का वही निर्माता है। बालकों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए शिक्षा संस्कार की अविश्यकता पर जोर दिया है। इस उपलक्ष्य से हिन्दी के कई स्थापित रचनाकारों ने बच्चों के लिए साहित्य लिखी हैं। प्रेमचंद, विष्णुप्रभाकर, अमृतलालनागर, रामवृक्षबेनीपुरी, जयप्रकाश भारती जैसे अनेक साहित्यकार बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल पत्रकारिता से हिन्दी बाल साहित्य को समृध्द बनाया। प्रेमचंद द्वारा लिखित 'राम काथ' के माध्यम से बच्चों मे कर्तव्यपरायणता, धर्म, भाईचारा, पितृवाक्य पालन, भाईचारा, इत्यादि गुणों का विकास किया है। 'कुत्ते की कहानी' से जीवजंतुओं के प्रति दया,करुणा जैसे कोमल भावनाओं को जगाया है। इस प्रकार कई साहित्यकार बच्चों का सर्वांगीण विकास अपना सामाजिक दायित्व समझकर बाल साहित्य लिखे हैं।

सम सामयिक संदर्भ में बाल साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य सर्जना हुई। आज कहानी उपन्यास सर्वाधिक पसंद की जानेवाली विधाएँ हैं बाद में कविताएँ। आज का कंप्यूटर रंगीन चित्रों से पुस्तक आकर्षक बन रहे हैं। चित्रकथाओं का लोकप्रियता बढ रही हैं। बच्चों की कलम के महत्व मिला। बाल भारती, बालवाणी, बाल हंस जैसे पत्रिकाएँ बच्चों की रचनाओं एवं चित्रों को स्थान देती है।

इक्कीसवी शताब्दी के वैश्वीकरण के इस माहौल में भिन्न - माध्यमों से कई विघटित तत्व समाज में फैलते जा रहे हैं। इससे बच्चे का मन प्रदूषित हो रहा है। जिसके कारण मानवजीवन विकृत हो रहा है। मानव को बचाने के लिए नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से भरपूर बाल साहित्य निर्माण की श्री समृध्दि होनी चाहिए।

निष्कर्ष : Conclusion

उपसंहार के अंतर्गत बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बाल मनोविज्ञान और बाल साहित्य के महत्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। समाज के नव निर्माण, भावात्मक एकता, राष्ट्रीय चिंतन धारा, व्यष्टि एवं समष्टि का कल्याण के हेतु लाभप्रद सिध्द होगा। बच्चों में आध्यात्मिक विकास एवं उन्नति को बडाना और अंधविश्वास, रूढ़ि एवं सांप्रदायिक संकीर्णता से दूर भव्य मानवीय समाज की स्थापना के लिए अभी तक लिखित बाल साहित्य काफी नहीं है।

Scanned with CamScanner

व्यक्ति में वैचारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय बोध को जगाने के लिए बाल साहित्य में और भी समृद्धि की आवश्यकता है। यही इस परियोजना का निष्कर्ष भी है।

सुझाव : Suggestions

१. माता-पिता और गुरु बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि बचपन से ही करनी चाहिए।

२. आज का कंप्यूटर युग बच्चों को पुस्तकों से दूर ले जा रहा है। बच्चों को पुस्तकालय की ओर आकृष्ट करना हरेक का कर्तव्य है।

३. सस्ता डिस्पो पुस्तकों के प्रचुरण से बच्चे पुस्तके पढ़ने की ओर आकृष्ट होते है। जिससे बच्चों में अच्छे चरित्र का निर्माण होता है।

०००००

Scanned with CamScanner

संदर्भ सूची

1. आधुनिक हिन्दी निबंध - भुवनेश्वर सक्सेना, पृ : १३
2. प्रेमचंद, बाबू श्यामसुंदरदास के निबंध
3. आधुनिक हिन्दी निबंध - भुवनेश्वर सक्सेना, पृ : २२
4. बाल साहित्य : समीक्ष के प्रतिमान और इतिहास -डॉ. सरोजनी पाण्डेय - पृः २३
5. भारतीय भाषाओं का बाल साहित्य - कादंबनी - पृः १००
6. हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा - पृः १०
7. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे - हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्यया पृः ७ पर उद्धृत
8. डिलामोर, वाल्टा, बाल साहित्य दिशा और दृष्टि पृः १०
9. कोमगर, हेनरी स्टील ए आर्टिकिल ऑफ चिल्ड्रन्स लिट्रेचर - पृः ७
10. हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा - पृः १०
11. डॉ. रत्नाकरपांडे - हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास भाग - १० पृः ४
12. निरंकार देव सेवक : बाल गीत साहित्य, अलिखित बाल गीत - पृः २९
15. निरंकार देव सेवक : बाल गीत साहित्य, अलिखित बाल गीत - पृः २९

Scanned with CamScanner

Government of Telangana
Commissionerate of Collegiate Education

Certificate of Appreciation

This Certificate is awarded to **Dr. V.Mamatha, Lecturer / Assistant / Associate Professor of Hindi, GDC Hanamkonda,** in recognition of her Outstanding Role as a Supervisor for Jignasa- State Level Student Study Projects Presentation on the topic **Hindi ke Baal Sahitya – Ek Adhyayan** in **Hindi** for the academic year 2019-20.

Academic Guidance Officer

Commissioner of Collegiate Education

Sponsored by State Project Directorate, RUSA

Scanned with CamScanner